Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–327

B.A. (Part–III) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper - II

(निबन्ध एवं भाषा)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   (i) शृंगार रस के सन्दर्भ में दांतों का महत्व निबन्धकार ने कैसे दर्शाया है।

   (ii) ''क्रोध सब मनोविकारों से फुर्तीला है।'' कैसे बताइए।

(iii) ''श्रेष्ठ काव्य के जो भी प्रतिमान स्थिर किए जाएँ, उनका विनियोग इन दो कवियों के काव्य में निर्बाध रूप से किया जा सकता है।'' निबन्धकार किन दो कवियों की बात कर रहा है और क्यों ?

(iv) वासुदेव शरण अग्रवाल का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(v) प्रेमचंद कैसी राष्ट्रभाषा के पक्षधर थे ?

(vi) साहित्य की परम्परा क्या है ?

(vii) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का केवल नामोल्लेख कीजिए।

(viii) हिन्दी निबन्ध के प्रकार बताइए।

(ix) उपन्यासकार प्रेमचन्द का परिचय दीजिए।

(x) राजस्थान के किन्हीं **पाँच** साहित्यकारों के नाम बताइए।

खण्ड–ब

नोट :–निम्नलिखित सात में से किन्हीं **पाँच** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

2. कवियों ने इसकी उपमा हीरा, मोती, माणिक से दी है वह बहुत ठीक है बरंच यह अवयव कथित वस्तुओं से भी अधिक मोल के हैं। यह वह अंग है, जिसमें पाकशास्त्र के छहों रस एवं काव्यशास्त्र के नवों रस का आधार है। खाने का मज़ा इन्हीं से है। इस बात का अनुभव यदि आपको न हो तो किसी बुढ़े से पूछ देखिए, सिवाय सतुआ के चाटने के और रोटी दूध में तथा दाल में भिगो के गले के नीचे उतार देने के, दुनिया भर की चीजों के लिए तरस ही के रह जाता होगा, रहे कविता के नो रस, सो उनका दिग्दर्शन मात्र हमसे सुन लीजिए।

3. बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। जिससे हमें दुख पहुँचा है उस पर यदि हमने क्रोध किया और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह बैर कहलाता है। इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती है; पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है। क्रोध अपना बचाव करते हुए शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्रायः नहीं देता, पर बैर उसके लिए बहुत समय देता है।

4. 'हितेन सह सहितं तस्य भाव : साहित्यम्।' साहित्य की इन्हीं दोनों व्युत्पत्तियों से हमको इन मूल्यों के प्रश्न को हल करने में सहायता मिलेगी। यह बात तो सभी मानेंगे कि जिसका जीवन में मूल्य है उसका साहित्य में भी मूल्य है। साहित्य के मूल्य जीवन के मूल्यों से भिन्न नहीं, अब प्रश्न यह होता है कि इनमें कोई सर्वप्रधान है कि जिमसें हाथी के पैर के समान सब के पैर आ जाएँ अथवा सब एक–सा महत्व रखते हैं और सब देवताओं के समान कोई छोटा–बड़ा नहीं ? यह प्रश्न टेढ़ा है। सब अपने–अपने पक्ष को महत्ता देकर अपनी–अपनी ढपली पर अपना–अपना राग अलापते हैं।

5. मेरा मन पूछता है—किस ओर ? मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है—पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर, अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर ? मेरी निर्बोध बालिका ने मानो मनुष्य जाति से ही प्रश्न किया है—जानते हो, नाखून क्यों बढ़ते हैं ? यह हमारी पशुता के अवशेष हैं। मैं भी पूछता हूँ—जानते हो, ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं ? ये हमारी पशुता की निशानी हैं।

6. सिद्धांतों की जितनी भारी गठरी लेकर हम अपने कर्मक्षेत्र के द्वार तक पहुँचते हैं, उतना भारी बोझ लेकर कदाचित् ही किसी अन्य देश के व्यक्ति को पहुँचना पड़ता हो परन्तु फिर भी कार्य क्षेत्र में हमीं सबसे अधिक निष्क्रिय प्रमाणित होंगे, कारण हम अपने सिद्धांतों का उपयोग से बचा-बचाकर उसी प्रकार रखने में उद्देश्य की सिद्धि समझ लेते हैं, जिस प्रकार धन का व्यय से बचाकर रखने वाले, कृपण उसके संचय में ही अपने उद्योग की चरम सफलता देख लेते हैं। परिस्थिति, काल और स्थान के अनुसार उनके प्रयोग तथा रूपों के विषय में जानने का न हमें अवकाश है न इच्छा। फल यह हुआ कि हमारा जीवन अपूर्ण वस्तुओं में सबसे अधिक अपूर्ण होने का दुर्भाग्य मात्र प्राप्त कर सका।

7. भक्त कहते हैं कि एकदम अकिंचन बना के रख देता है, सारे वस्त्र उतरवा लेता है, एकदम नंगा कर देता है, धर्म-अधर्म कुछ भी नहीं रहने देता। सगे बंधु बान्धव कहते हैं, यह किसी का नहीं, यह केवल विपत्ति का है। श्री कृष्ण सब सुनते हैं और मुस्कराते हैं, पर क्या वे स्वयं निरन्तर टूटते नहीं है, लोगों को इतना तोड़ने वाला क्या स्वयं टूटते ही रहते हैं, गोपियों से, गोपों से, राधा से, मथुरा से, गोकुल से, वृन्दावन से, फिर मथुरा से, द्वारका से, हस्तिनापुर से, इन्द्रप्रस्थ से, फिर प्रभास से, अन्त में अपनी उस मधुरमूर्ति से जिससे उन्होंने असंख्य-असंख्य जनों को तोड़ा—पूरा जीवन उनका टूटना ही तो है।

8. आज के हिन्दुस्तान में जहाँ हरिजन समस्या, नारी मुक्ति, वैज्ञानिक दृष्टि, वर्ग हीन समाज, और जाति भेद अब भी ज्वलंत समस्याएँ हैं जहाँ अब भी गुरुद्वारों और मस्जिदों को चुनाव-प्रचार का मजबूत केन्द्र माना जाता है और गौवध विरोधी आन्दोलन हो सकता है, तो कैसे कहा जाए कि उन्नींसवीं शदी के मानवीय मूल्य समता, न्याय, धर्मनिरपेक्षता, वर्ण निरपेक्षता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि के लिए जागरूक रहना आधुनिकता नहीं और हरिजनोद्धार तथा महिला शिक्षा आन्दोलन की चर्चा आधुनिकता नहीं, सच तो यह है कि इस देश में समूहगत जीवन में यह पुरानी उन्नीसवीं शती वाली आधुनिकता ही सार्थक आधुनिकता है। मेरी समझ से यह अब भी बासी नहीं, ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार पुरानी भले ही कहा जाए। इसी से इसे मैं पुरानी आधुनिकता कहकर स्वीकारता हूँ।

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

9. 'मन की दृढ़ता' निबन्ध में व्यक्त विचारों की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

10. 'प्रेमचन्द और भाषा समस्या' शीर्षक को स्पष्ट करते हुए निबन्ध में विवेचित डॉ. रामविलास शर्मा के विचारों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

11. ''देवनागरी लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक है'' इस कथन के सन्दर्भ में गुण–दोष की विवेचना कीजिए।

12. निबन्धकार के रूप में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के साहित्यिक योगदान का वर्णन कीजिए।